ICSSR Sponsored
ISSN: 2319-9997
Journal of Nehru Gram Bharati University, 2025; Vol. 14 (II):358-361

प्रवासी भारतीय : वर्तमान संदर्भ

साक्षी मिश्रा एवं हिमांशु शेखर सिंह

हिन्दी विभाग, नेहरू ग्राम भारती मानित विश्वविद्यालय, प्रयागराज।

Received: 09.10.2025 *Revised: 17.11.2025* *Accepted:28.11.2025*

सारांश

भारतीय मूल के लोग विश्व के विभिन्न देशों में फैले हुये हैं। ये भारतीय विदेशों में रहते हुये भी हिंदी लेखकों की भांति हिंदी साहित्य को जन–जन तक पहुंचाया है। प्रवासी साहित्य अपनी विशिष्ट संवेदना, दृष्टिकोण, परिस्थिति और सृजन–प्रक्रिया के कारण प्रवासी हिंदी–साहित्य को एक मौलिक रूप प्रदान करके हिंदी साहित्य जगत में योगदान किया है। भारत में रचे जाने वाले हिंदी साहित्य से यह प्रवासी हिंदी साहित्य संवेदना, परिवेश और सरोकार से एकदम भिन्न है, क्योंकि उनकी चिंताएँ, समस्याएँ तथा संघर्ष भारत के लेखक से भिन्न है। इस प्रकार प्रवासी भारतीय साहित्य दो दृष्टियों से महत्वपूर्ण है– एक तो वह अपनी मौलिकता और विशिष्टता रखता है और हिंदी साहित्य में कुछ नया जोड़ता है, दूसरे वह हिंदी साहित्य को वैश्विक बनाने में महत्वपूर्ण योगदान रखता है।

बीज शब्द–*प्रवासी, कौशल प्रशिक्षण, व्यावसायिक दक्षता, कौशल विकास योजना, आर्थिक शैक्षणिक।*

प्रस्तावना

प्रवासी भारतीय वे हैं, जो अपने देश भारत से जाकर विदेशों में बस गये हैं। प्रवासी भारतीयों की संख्या करीब दो करोड है और वे दुनिया के कई देशों में फैले हुये हैं। गयारह देशों में 5 लाख से ज्यादा प्रवासी भारतीय रहते हैं तथा इन देशों में प्रवासी भारतीयों की आर्थिक शैक्षणिक और व्यावसायिक दक्षता काफी मजबूत है। प्रवासी भारतीयों को बढ़ावा देने के लिए हर साल 9 जनवरी को प्रवासी भारतीय दिवस मनाया जाता है। यह दिन इसलिए चुना गया क्योंकि 9 जनवरी, 1915 को महात्मा गाँधी भारत लौटे थे। प्रवासी भारतीयों के लिए प्रवासी कौशल विकास योजना (पीकेवीवाई) भी हैं। इस योजना के तहत विदेशों में करियर की तलाश में भारतीय युवाओं को कौशल प्रशिक्षण दिया जाता है।

प्रवासी भारतीयों में भारतीय मूल के व्यक्ति (पीआईओ) और भारत के विदेशी नागरिक (ओसीआई) भी शामिल है। एनआरआई वे भारतीय नागरिक होते हैं जो साल में 180 दिन से ज्यादा समय विदेशों में बिताते हैं।

विशेष

जहाँ–जहाँ प्रवासी भारतीय बसे वहाँ उन्होंने आर्थिक तंत्र को मजबूती प्रदान की और बहुत कम समय में अपना सथान बना लिया। वे मजदूरी, व्यापारी, इंजीनियर, अनुसंधानकर्ता, खोजकर्ता, डॉक्टर, वकील, प्रबंधक, प्रशासक आदि के रूप में दुनिया भर में स्वीकार किये गये। प्रवासियों की सफलता का श्रेय उनकी परंपरागत सोच सांस्कृतिक मूल्यों और शैक्षणिक योग्यता को दिया जा सकता है। कई देशों में वहाँ के मूल निवासियों की अपेक्षा भारतवंशियों की प्रति व्यक्ति आय ज्यादा है। वैश्विक स्तर पर सूचना तकनीक के क्षेत्र में क्रांति में इनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है, जिसके कारण भारत की विदेशों में छवि निखरी है।

प्रवासी भारतीयों की सफलता के कारण भी आज भारत आथ्रिक विश्व में आर्थिक महाशक्ति के रूप में उभर रहा है। दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों के खिलाफ संस्थागत भेदभाव को समाप्त करने के लिए किया गया महात्मा गांधी का संघर्ष आधुनिक भारत में प्रवासी भारतीयों से स्वयं को जोड़ने के लिए प्रेरणादायक किंवदंती बन गया। प्रवासन का कार्य केवल भौगोलिक सीमाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक सांस्कृतिक विस्तार भी है। सिख–समुदाय भारत के सबसे बड़े प्रवासियों में से एक है। ये यूके, कनाड़ा, और कई अन्य देशों में निवास कर रहे हैं तथा भारतीय संस्कृति से परे विश्व को परिचित करा रहे हैं।

प्रेषण अन्य देश में निवास कर रहे कर्मचारी द्वारा अपने देश में किसी व्यक्ति को पैसे का हस्तांतरण करना है। प्रवासियों द्वारा घर भेजा गया पैसा विकासशील देशों के बसे बड़े वित्तीय प्रवाह में से एक है। विश्व बैंक के अनुसार वर्ष 2018 में सर्वाधिक प्रेषण प्राप्त करने के साथ भारत ने दुनिया के शीर्ष प्राप्तकर्ता के रूप में अपनी स्थिति बरकरार कर रखी है। सक्रिय प्रवासी भारतीयों के साथ संबंधों के पोषण और सामाजिक–आर्थिक विकास में वृद्धि करने में प्रमुख योगदान तकनीकी क्षेत्र का भी रहा है। कई बड़ी बहुराष्ट्रीय कंपनियों में भारतीय मूल के निर्णायक पदों पर आसीन है। जिनमें गूगल, माइक्रोसॉफ्ट पोष्नीको इत्यादि शामिल है। प्रवासी भारतीयों के समर्थन से संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में भारत की स्थायी सदस्यता एक वास्तविकता बन सकती है। भारत ने नवंबर 2017 में अंतरराष्ट्रीय न्यायालय में न्यायमूर्ति दलवीर भंडारी की पुनर्नियुक्ति के लिए संयुक्त राष्ट्र में दो तिहाई मत हासिल कर अपने राजनायिक प्रभाव का प्रदर्शन किया।

खाड़ी देशों में लगभग 8.5 मिलियन भारतीय रहतेहैं, जो दुनिया में प्रवासियों का सबसे बड़ा संकेंद्रण है। अरब प्रायद्वीप की भौगोलिक और ऐतिहासिक निकटता से भारतीयों के लिए सुविधाजनक स्थान बनाती है। संयुक्त राज्य अमेरिका में लगभग 4 मिलियन भारतीय रहते हैं यहाँ मैक्सिको के बाद भारतीयों का दूसरा सबसे बड़ा केन्द्र है। संयुक्त राज्य अमेरिका में वर्ष 2020 के अंत में होने वाले राष्ट्रपति पद के चुनाव में प्रवासी भारतीयों की बनी भूमिका थी, 2024 के चुनाव में कुछ ऐसी ही भूमिका देखने को मिली।

तवासी लेखक का संवेदन संस्कार के रूप में अपने नये परिवेश को ग्रहण करता चलता है। वह अपने जन्म स्थान, देश और मिट्टी से अलग होकर एक अन्य देशकाल तथा परिवेश में चला जाता है। वह उसी में जीवन यापन करता है। परिवेश बदल जाने से प्रवासी के जीवन में विषमताएं और जटिलताएं आती हैं। जिस कारण उनके नये संस्कार, नया दृष्टिकोण, नये विचार, नई सोच और नई मान्यताएं बनने लगती है। वह पुराने मूल्यों को नये दृष्टिकोण से देखने लगता है। इन स्थानों में बसे हिंदी लेखक विभिन्न सामाजिक परिवेशों से प्रभावित होते हैं, और इन परिवेशों और परिस्थितियों को अपनी रचना का विषय बनाते हैं। इनके द्वारा रचित साहित्य प्रवासी साहित्य हैं।

प्रवास का इतिहास भले ही पुरातन क्यों न हो, लेकिन हिंदी प्रवासी साहित्य की भूमिका/प्रक्रिया का वैचारिक प्रारम्भ मुंशी प्रेमचंद की कहानी 'यह मेरी जन्मभूमि है' से माना जाता है। प्रेमचंद की अन्य कहानी 'शूद्रा' मौरिशस के गिरामीटिया मजदूरों के जीवन पर आधारित है। जिसमें समाज के वैचारिक पृष्ठभूमि को प्रस्तुत किया गया है। चंद्रहार शर्मा 'गुलेरी' की हिंदी की पहली कालजयी कहानी 'उसने कहा था' में प्रवासी भारतीय सैनिकों की एक छति प्रस्तुत की गयी है। जहाँ भारतीय सैनिकों की एक टुकड़ी प्रथम विश्व युद्ध में राष्ट्र की तरफ से जर्मन सेनाओं के विरूद्ध लड़ रही है। गोदान में धनिया–गोबर वार्तालाप में भी मारीच देश का उल्लेख हुआ है, जो मॉरीशस का ही अपभ्रंश माना जा सकता है। धनिया का कथन है कि, ''आज साल भर बाद जाकर सुध ली है, तुम्हारी राह देखते–देखते आंखे फट गयी। यह आशा बांधी रहती थी कि, वह दिन आयेगा और कब देखूंगी। कोई कहता था मिरिच से गया, कोई डमरा टापू बताता था। सुन–सुन कर जान सूख जाती थी।'' इस प्रकार विभिन्न प्रकार के उदाहरण प्रवासी–साहित्य में व्याप्त विचारों एवं कथनों को उकेरते हुए भाव दृष्टिगत होते हैं।

तमाम विरूद्ध परिस्थितियों के रहते हुये प्रवासी लेखकों के द्वारा अनेक समकालीन परिस्थितियों को एक वैचारिक धरातल पर, मानवीय संवेदना से ओतप्रोत भावभूमि पर उसकी सत्यता और वास्तविकता के साथ प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। अधिकांशतः प्रवासी साहित्य उसी भाषा में लिखा जाता है, जिसके संस्कार हमें बचपन से मिले हों। यदि अपने साहित्य की अभिव्यक्ति के लिए अंग्रेजी, फ्रेंच या स्पेनिश आदि का चयन करते हैं, तो साहित्य तो रचा जायेगा पर ऐसा साहित्य संवेदनशील नहीं होगा। विदेशों में बैठा हिंदी रचनाकार इसलिये हिंदी लेखन करता है क्योंकि इसके माध्यम से वह अपने पीछे छूट चुके देश के साथ आंतरिक संबंध और वार्तालाप बनाये रखता है। प्रवासी हिंदी साहित्य संपूर्ण हिंदी साहित्य की मुख्यधारा है और इसका महत्वपूर्ण अंग बन रहा है।

भाव–विचार की बात की जाए तो स्पष्टतः झलकता है कि भले ही अन्य देश में रह रहे भारतीय मूल के निवासी हों, पर उनका हृदय अपने सामाजिक, सांस्कृतिक के लिये ही साराबोर होता है। वे भले ही वहां पर निवास करते हैं, इसलिये वे अपनी पहचान अन्य देश में रहकर उसे अपनी लेखनी व विचारों में

उतार कर अपने मूल देश की समृद्धि को विकसित करने में लगे हैं। इसी तरह कार्योन्मुख होकर एक दिन प्रगति शीर्ष पर प्रवासी भारतीय लेखक पर होंगे।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि, अप्रवासी भारतीय उन विविध विचारों, भावों का वाहक है जो प्रवासी जीवन को चारों ओर से घेरे हुये हैं। भारतीय और पाश्चात्य संस्कृति के मध्य व्याप्त संघर्ष, धार्मिक आस्थाएं, बुजुर्गों की समस्याएं, नारी शोषण, बचपन की स्वतंत्रता, खान–पान, रहन–सहन की समस्या, पालन पोषण की समस्या, अकेलेपन की समस्या, निराशा, असाद, वेदना, घुटन, घरेलु हिंसा, आपसी संघर्ष, अपनों से बेगानापन, पीढ़ियों का अन्तर्द्वन्द्वा, नैतिक मूल्यों का ह्रास, पश्चिमी सभ्यता की ओर बढ़ावा, अपनी संस्थाओं, प्रथाओं और मान्यताओं को बचाकर रखने का संघर्ष, आदि विविध समकालीन विचार–विमर्श को समेटे हुये प्रवासी साहित्य निरंतर भारतीय साहित्य पर अपनी पहुंच बनाता चला जा रहा है। आज हिंदी प्रवासी साहित्य जन–जन को विदेशी जीवन की सत्यता के दर्शन कराने वाला है। किस प्रकार विदेशों में कूच कर गये प्रवासी भारतीय, बाह्य रूप से चमक दमक से मंडित होकर भी आंतरिक रूप से गहन अंधकार में है। यह साहित्य इस अन्तर्द्वंद्व को अभिव्यक्त करने वाला है। हिंदी प्रवासी साहित्य अपने आप में एक विशिष्ट साहित्य है, जिसके अंदर अनेक ह्रदयों की अभिव्यक्ति समाहित है।

हिंदी प्रवासी साहित्य वर्तमानकालीन विचार विमर्श के माध्यम से प्रवासी भारतीयों के जीवन के विविध स्वरूपों को अभिव्यक्तकरता है। वह प्रवासी भारतीयों के ऐसे विभिन्न अनकहे पहलुओं को उनकी सत्यता की, वास्तविकता को प्रकट करते हुये भारतीय प्रवासियों के ह्रदय की वेदना और पीड़ा को उजागर करने वाला है। ऐसा प्रतीत होता है कि, हिंदी प्रवासी साहित्य मानो भारतीय प्रवासियों के सत्य और यथार्थ के धरातल पर व्याप्त जगमगाती दुनिया के मध्य छिपे हुये अंधकार को प्रकट करने वाला है जो दिखता भले न हो लेकिन अत्यधिक गहरा और काला है वास्तव में हिंदी प्रवासी साहित्य में अथवा प्रवासी भारतीय में व्याप्त गहन विचार भाव एवं संकल्पनात्मक अनुभूति अनुशीलन करने योग्य है।

संदर्भ सूची

1. जे0 लेलीवल्ड, ग्रेट सोल : महात्मा गाँधी और भारत के साथ उनका संघर्ष।
2. गबी0आर0 लालकुंती : फिजी में गिरामीटियापन।
3. महात्मा गाँधी की संकलित कृतियाँ : खण्ड 1, पृ0 202
4. महात्मा गांधी की संकलित कृतियाँ
5. एन नटराजन–अटलांटिक गाँधी, कैरेबियन गाँधी, इकोनॉमिकल एंड पॉलिटिकल।

Disclaimer/Publisher's Note:

The statements, opinions and data contained in all publications are solely those of the individual author(s) and contributor(s) and not of JNGBU and/or the editor(s). JNGBU and/or the editor(s) disclaim responsibility for any injury to people or property resulting from any ideas, methods, instructions or products referred to in the content.